IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कौटिल्य तथा उनके युग का ऐतिहासिक अनुशीलन

Shashi Prabha

Research Scholar

University Department of History

Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga - 846004

Abstract: अर्थशास्त्र में समसामयिक राजनीति, अर्थनीति, विधि, समाजनीति, तथा धर्मादि पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस विषय के जितने ग्रंथ अभी तक उपलब्ध है उनमें से वास्तविक जीवन का चित्रण करने के कारण यह सबसे अधिक मूल्यवान है। इस शास्त्र के प्रकाश में न केवल धर्म, अर्थ और काम का प्रणयन आर पालन होता है अपितु अधर्म, अनर्थ तथा अवांछनीय का शमन भी होता है।

कृषि, वाणिज्य, प्रशासन, साहित्य, कला, सैन्य प्रबंधन तथा अन्य जुड़े मुद्दों के आधार पर कौटिल्य के युग का अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। एक प्रकांड विद्वान तथा एक गंभीर चिंतक के रूप में कौटिल्य तो विख्यात है ही, एक व्यवहारिक एवं चतुर राजनीतिज्ञ के रूप में भी उसे ख्याति मिली है। नंदवंश के विनाश तथा मगध साम्राज्य की स्थापना एवं विस्तार में उसका ऐतिहासिक योगदान है। सालाटोर के कथनानुसार प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में काटिल्य का सर्वोपरि स्थान है।

Index Terms - कौटिल्य, राजनीति, कूटनीति, साहित्य, चाणक्य, काल।

Introduction

प्रस्तुत अध्ययन में कौटिल्य तथा उनके युग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया गया है।। कौटिल्य एक महान चिंतक थे। राजशासन का उन्हें व्यापक अनुभव था। वे स्वाभिमानी थे। अतः प्रस्तुत शोध में उनके कालखंड का गहन एवं गंभीर तथ्यों के आधार पर विवेचन किया गया है। कृषि, वाणिज्य, प्रशासन, साहित्य, कला, सैन्य प्रबंधन तथा अन्य जुड़े मुद्दों के आधार पर कौटिल्य के युग का अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। कौटिल्य के जीवन–चरित्र के संबंध में प्रामाणिक तथ्यों का अभाव है, पंरतु जो तथ्य मिले है, उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कौटिल्य का जन्म ईसा के चार वर्ष पूर्व हुआ। उसके जन्मस्थान के संबंध में मतभेद पाया जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार कौटिल्य का जन्म पंजाब के चणक क्षेत्र में हुआ था, जबकि कुछ विद्वान मानते है कि उसका जन्म दक्षिण भारत में हुआ था। कई विद्वानों का यह मत है कि वह कांचीपुरम का रहने वाला द्रविण ब्राह्मण था। वह जीविकोपार्जन की खोज में उत्तर भारत आया था।

कुछ विद्वानां क मतानुसार केरल भी उनका जन्म स्थान बताया जाता है। इस संबंध में उनके द्वारा चरणी नदी का उल्लेख इस बात के प्रमाण के रूप में दिया जाता है। कुछ संदर्भो में यह उल्लेख मिलता है कि केरल निवासी विष्णुगुप्त तीर्थाटन के लिए वाराणसी आया था, जहाँ उसकी पुत्री खो गयी। वह फिर केरल वापस नहीं लौटा और मगध में

आकर बस गया। इस प्रकार के विचार रखने वाले विद्वान उसे केरल के कुतुल्लू नामपुत्री वंश का वंशज मानते है। कई विद्वानों ने उसे मगध का ही मूल निवासी माना है। कुछ बौद्ध साहित्यों ने उसे तक्षशिला का निवासी बताता है। कौटिल्य के जन्मस्थान के संबंध में अत्यधिक मतभेद रहने के कारण निश्चित रूप से यह कहना कि उसका जन्म स्थान कहाँ था। कठिन है, परंतु कई संदर्भो के आधार पर तक्षशिला को उसका जन्मस्थान मानना ठीक रहेगा। वी के सुब्रमण्यम ने कहा है कि कई संदर्भो में इस बात का उल्लेख मिलता है कि अलेक्जेंडर को अपने आक्रमण के अभियान मे युवा कौटिल्य से भेंट हुई थी। चूँकि अलेक्जेंडर का आक्रमण अधिकतर तक्षशिला में हुआ था, इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि कौटिल्य का जन्म स्थान तक्षशिला क्षेत्र में ही रहा होगा। कौटिल्य के पिता का नाम चणक था। वह एक गरीब ब्राह्मण था और किसी तरह अपना गुजर–बसर करता था। अतः स्पष्ट है कि कौटिल्य का बचपन गरीबी और दिक्कतों में गुजरा होगा। कौटिल्य कीन शिक्षा–दीक्षा के संबंध में कहीं कछ विशेष जिक्र नहीं मिलता है, परंतु उसकी बुद्धि की प्रखरता और उसकी विद्वता उसके विचारों से परिलक्षित होती है। वह कुरूप होते हुए भी शारीरिकरूप स बालष्ठ था। उसकी पुस्तक श्अर्थशास्त्रश के अवलोकन से उसकी प्रतिभा, उसके बहुआयामी व्यक्तित्व और दूरदर्शिता का पूर्ण आभास होता है।

कौटिल्य के बारे में यह कहा जाता है कि वह बड़ा ही स्वाभिमानी एवं क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति था। एक किवदंती के अनुसार एक बार मगध के राजा महानंद ने श्राद्ध के अवसर पर कौटिल्य को अपमानित किया था। कौटिल्य ने क्रोध के वशीभूत होकर अपनी शिखा खोलकर यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक वह नंद वंश का नाश नहीं कर देगा तब तक वह अपनी शिखा नहीं बाँधेगा। कौटिल्य के व्यावहारिक राजनीति में प्रवेश करने का यह भी एक बड़ा कारण था। नंदवंश के विनाश के बाद उसने चन्द्रगुप्त मौर्य को राजगद्दी पर बैठने में हर संभव सहायता की। चन्द्रगुप्त मौय द्वारा गद्दी पर आसीन होने के बाद उसे पराक्रमी बनाने और मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से उसने व्यवहारिक राजनीति में प्रवेश किया। वह चन्द्रगुप्त मौर्य का मंत्री भी बना। कई विद्वानों ने यह कहा है कि कौटिल्य ने कहीं भी अपनी रचना में मौर्यवंश या अपने मंत्रित्व के संबंध में कुछ भी नहीं कहा है, पंरतु अधिकांश स्रोतों ने इस तथ्य की संपुष्टि की है।

समीक्षात्मक अध्ययन

अर्थशास्त्र में समसामयिक राजनीति, अर्थनीति, विधि, समाजनीति, तथा धर्मादि पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस विषय के जितने ग्रंथ अभी तक उपलब्ध है उनमें से वास्तविक जीवन का चित्रण करने के कारण यह सबसे अधिक मूल्यवान है। इस शास्त्र के प्रकाश में न केवल धर्म, अर्थ और काम का प्रणयन आर पालन होता है अपितु अधर्म, अनर्थ तथा अवांछनीय का शमन भी होता है।

इस ग्रंथ की महत्ता को देखते हुए कई विद्वानों ने इसके पाठ, भाषांतर, व्याख्या, और विवेचन पर बड़े परिश्रम के साथ बहुमूल्य कार्य किया है। शाम शास्त्री और गणपति शास्त्री का उल्लेख किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यूरोपीय विद्वानों में हर्मान जाकोबो (ऑन दि अथॉरिटी ऑफ कौटिल्य, इ0 1918, ए हिलेब्रांड्ट, डॉ लॉली, प्रो एबी कीथ (ज रा,सी)

आदि के नाम आदर के लिए साथ लिए जा सकते है। अन्य भारतीय विद्वानों में डॉ नरेन्द्रनाथ ला (स्टडीज इन एशेंट हिंदू पॉलिटी, 1914), श्री प्रमथनाम बनर्जी (पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन इन ऐशेंट इंडिया), डा0 काशीप्रसाद जायसवाल (हिंदू पॉलिटी), प्रो0 विनयकुमार सरकार (दि पाजिटिव बैकग्राउंड ऑव हिंदू सोशियोलॉजी), प्रो0 नारायणचन्द्र, बंधोपाध्याय, डा0 प्राणनाथ विद्यालंकार आदि के नाम उल्लेखनीय है।

अध्ययन का उद्देश्य

एक प्रकांड विद्वान तथा एक गंभीर चिंतक के रूप में कौटिल्य तो विख्यात है ही, एक व्यवहारिक एवं चतुर राजनीतिज्ञ के रूप में भी उसे ख्याति मिली है। नंदवंश के विनाश तथा मगध साम्राज्य की स्थापना एवं विस्तार में उसका ऐतिहासिक योगदान है। सालाटोर के कथनानुसार प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में कौटिल्य का सर्वोपरि स्थान है। मैकियावेली की भाँति कौटिल्य ने. भी राजनीति को नैतिकता से पृथक कर एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में अध्ययन करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य कौटिल्य तथा उनके युग के विश्लेषण से जुड़ा हुआ है। उनके युग से संबंधित तथ्यों का उद्‌घाटन किया गया है।। कृषि संरचना तथा वर्ग संरचना पर प्रकाश डाला गया है।। श्रम नियमों का अध्ययन किया गया है।। कला–साहित्य की व्याख्या की जाएगी। नैतिकता तथा मर्यादा के मानदंडों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध हेतु प्रकाशित एवं अप्रकाशित अभिलेखों, पाठ्यसामग्रियों एवं अन्य संबंधित स्रोतों से तथ्य का संकलन किया गया है।। विभिन्न पुस्तकों, अनुसंधान केन्द्रों एवं कौटिल्य की स्मृति में संस्थापित संस्थानों से भी तथ्यों का संकलन किया गया है।। साथ ही कौटिल्य से जुड़े कथाओं में उपलब्ध तथ्यों का उपयोग किया गया है।।

ज्ञान के क्षेत्र में योगदान

भारत के प्राचीन इतिहास में कौटिल्य का कालातीत महत्व है। उन्होंने इतिहास को नयी दिशा दी। उन्होंने शासन प्रबंधन का एक नया स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने नैतिकता और मर्यादा को एक व्यावहारिक स्वरूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कृषि श्रम, समाज कल्याण, साहित्य, वाणिज्य, व्यापार तथा जीवन से जुड विविध पक्षों को प्रभावित किया। अतः कौटिल्य तथा उनके युग के अध्ययन के आधार पर अनुसंधान को नयी दिशा दी जा सकती है। इतिहास के तथ्यों को एक नया स्वरूप प्रदान किया जा सकता है।

उपकल्पना

कौटिल्य ने शासन प्रबंधन को नयी दिशा प्रदान की। उन्होंने जनता के सवालों को खड़ा किया। शासक के चरित्र, आचरण तथा नैतिकता को अनुशासित किया। जाहिर है कि उन्होंने अपने युग को प्रभावित किया। कौटिल्य ने अधिकारी तंत्र की संरचना की व्यवस्थित किया। वाणिज्य तथा व्यापार को तर्कपूर्ण बनाया। उन्होंने राजा तथा प्रजा के

अधिकार एवं कर्तव्यों की व्याख्या की। उनका कालखंड उनके वैचारिक सूत्रों के आधार पर एक नयी दिशा को अनुसंधान से जुड़ा हुआ है।

अर्थशास्त्र, कौटिल्य या चाणक्य (चौथी शदी ईसा पूर्व) द्वारा रचित संस्कृत का एक ग्रंथ है, इसमें राज्य व्यवस्था, न्याय एवं राजनीति आदि के विभिन्न पहलुआं पर विचार किया गया है। अपने तरह का (राज्यदृप्रबधन विषयक) यह प्राचीनतम ग्रंथ है। इसकी शैली उपदेशात्मक और सलाहात्मक (**Instructional**) है।

यह प्राचीन भारतीय राजनीति का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसका पूरा नाम ''कौटिल्य अर्थशास्त्र'' है। लेखक का व्यक्तिनाम विष्णुगुप्त, गोत्रनाम कौटिल्य (कुटिल से उत्पन्न) और स्थानय नाम चाणक्य (तक्षशिला के पास चणक नामक स्थान का रहनेवाला) था। अर्थशास्त्र (15.431) में लेखक का स्पष्ट कथन है – इस ग्रंथ की रचना उन आचार्यों ने की जिन्होंने अन्याय तथा कुशासन से क्रुद्ध होकर नंदों के हाथ में गए हुए शास्त्र एवं पृथ्वी का शीघ्रता से उद्धार किया था।

संदर्भ सूची

- *Shatavadhani Ganesh. Chanakya's contribution to the cultural heritage of Bharat.Chand Publications.2002. p.42*
- *Chand Chauhan, Gian. Origin and Growth of Feudalism in Early India: From the . Mauryas to AD_650. Munshiram Manoharlal. New Delhi. 2004, p.25.*
- *Radha Kumud Mookerji. Chandragupta Maurya and his times. 4th ed.Motilal Banarasi Das. New Delhi. 1966, p.40.*
- *त्रिपाठी, आर0एस0, प्राचीन भारत का इतिहास, राजकमल, नई दिल्ली ई० 1994, पृ0 19*
- *सचाउ, अल्बरूनी का भारत, राजकमल, नई दिल्ली, 2002 खण्ड–2, पृ० 15.*
- *त्रिपाठी, आर०एस०, प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास नई दिल्ली, 1984, पृ0 129*
- *जॉनरल, रॉयल एसीयॉटिक सोसाइटी, कोलकाता, 1898, पृ0 573 17. तथैव, 1898, पृ0 575*
- *Ambirajan, S. (1997) "The Concepts of Happiness, Ethics, and Economic Values in Ancient Economic Thought". in B. B. Price (ed.) Ancient Economic Thought, Vol. 1, Routledge, London and New York. 1997.PP.121-124*